किया जाता है उसी प्रकार शिक्षा की परिभाषा भी विभिन्न दृष्टिकोण से विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया है हालांकि इनकी परिभाषाओं द्वारा बताए गए शिक्षा के अर्थ में कोई अन्तर नहीं होता है लेकिन वर्गीकरण करके अध्ययन करना सरल होता है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शिक्षा की विभिन्न परिभाषाएं विभिन्न दृष्टिकोण को आधार बनाकर दी जा सकती है।

1 संकुचित दृष्टिकोण से शिक्षा की परिभाषा

2 व्यापक दृष्टिकोण से शिक्षा की परिभाषा

3 दार्शनिक दृष्टिकोण से शिक्षा की परिभाषा

4 सामाजिक दृष्टिकोण से शिक्षा की परिभाषा

शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएं निम्न हैं।

आरगेनाइजेशन आफ सेकेण्डरी स्कूल्स रिपोर्ट के अनुसार :

''शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान, रूचियों, आदर्शों, आदतों तथा शक्तियों का विकास करना है, जिसके द्वारा उसे अपना उचित स्थान प्राप्त हो सके तथा वह इस स्थान का सदुपयोग कर स्वयं तथा समाज को पवित्र उद्देश्यों की ओर ले जाएं।''

रेमाण्ट के अनुसार– ''शिक्षा उस विकास का नाम है जो शैशवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक होता ही रहता है अर्थात् शिक्षा वह क्रम है जिसमें मानव अपने को आवश्यकतानुसार नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है।''

जी.एच. थामसन के अनुसार– ''शिक्षा एक विशेष प्रकार का वातावरण है जिसका प्रभाव बालक के चिन्तन, दृष्टिकोण तथा व्यवहार करने की आदतों पर स्थायी रूप से परिवर्तन के लिए डाला जाता है।''

जॉन डी.वी. के अनुसार– ''शिक्षा अनुभवों के पुनर्निर्माण की एक निरन्तर प्रक्रिया है जो जीवन में सहायक होती है। यह व्यक्ति में निहित सभी क्षमताओं का विकास करती है। जो उसे अपने वातावरण को नियंत्रित करने में तथा अपनी योग्यताओं को विकसित करने में समर्थ बनाती है।''

व्यापक अर्थों में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशलों में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृति एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालयों) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि

एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

शिक्षा की विशेषताएं

1 शिक्षा व्यक्ति की सम्पूर्ण शक्तियों का विकास है।

2 शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।

3 शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।

4 शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसमें बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार पर बल दिया जाता है।

5 शिक्षा एक द्विमुखी (शिक्षक, छात्र) प्रक्रिया है।

6 शिक्षा एक त्रिमुखी (शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम) प्रक्रिया है।

7 शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है।

8 शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है।

9 शिक्षा औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों रूपों से सम्पादित की जाती है।

स्थान एवं काल के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा से यह आशा की जाती है कि यह संतुलित मानव का विकास करे बालकों को समाज के लिए लाभप्रद कार्य को करने और सामूहिक जीवन में भाग लेने के लिए तैयार करे –**जवाहर लाल नेहरू**

परन्तु आज समाज की यह आवश्यकता है कि शिक्षा के द्वारा ऐसे नागरिकों का निर्माण किया जाए जो मानवीय मूल्यों को बरकरार रख सके, बल्कि सम्पूर्ण आधुनिक ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी का इस प्रकार सदुपयोग हो जिससे भारत की सांस्कृतिक विरासत अक्षुण्य रहे। मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है शिक्षा के उद्देश्यों का सम्बन्ध उसकी प्रगति से होना चाहिए तभी तो डी.वी. ने कहा है कि– ''शिक्षा का लक्ष्य एक असहाय प्राणी के विकास में सहायता देना है, जिससे कि वह सुखी नैतिक तथा कुशल बन सके।''

वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसा कथन होता है जो व्यक्ति में वांछित परिवर्तन की आदर्श स्थिति की ओर संकेत करता है, ऐसी आदर्श स्थिति जिसे सीमा में नहीं बांधी जा सकती।

किसी भी समाज की शिक्षा के उद्देश्य मूलरूप से उस समाज एवं राष्ट्र के जीवन दर्शन पर आधारित होते हैं। इसके अतिरिक्त उस राष्ट्र की सभ्यता संस्कृति एवं आर्थिक ढांचा भी शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन आधारों पर शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं :

AMIT SAMPLE

1 मानसिक विकास का उद्देश्य

2 सामाजिक विकास का उद्देश्य

3 सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य

4 नैतिक एवं चारित्रिक विकास का उद्देश्य

5 व्यावसायिक विकास का उद्देश्य

6 शासन तन्त्र एवं नागरिकता की शिक्षा का उद्देश्य

7 राष्ट्र की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति का उद्देश्य

8 आध्यात्मिक चेतना के विकास का उद्देश्य

9 समायोजन का उद्देश्य

10 शारीरिक विकास का उद्देश्य

हम सभी जानते हैं कि मानव विकास की विभिन्न अवस्थाएं होती हैं। उसके जीवन के मुख्य रूप से तीन पक्ष बताए गए हैं प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक। इसमें मानव विकास के काल (समय) के आधार पर भी शिक्षा के उद्देश्य का निर्धारण किया गया है।

1 प्राचीन काल में शिक्षा के उद्देश्य

2 मध्यकाल में शिक्षा के उद्देश्य

3 वर्तमान काल में शिक्षा के उद्देश्य

प्रमुख शिक्षाविद् डॉ. अल्तेकर ने प्राचीन शिक्षा के उद्देश्यों को आठ भागों में बाँटकर अध्ययन किया है।

1 पावनता तथा पवित्रता की भावना

2 चरित्र का निर्माण

3 व्यक्तित्व का विकास

4 नागरिक एवं सामाजिक भावना

5 सामाजिक कुशलता में वृद्धि और राष्ट्रीय संरक्षण व प्रसार चितवृत्तियों का विरोध तथा ईश्वर भक्ति एवं उपासना पर बल शिक्षा के उद्देश्य हैं।

मध्यकाल में शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा का चाहे वह प्राचीन काल रहा हो या मध्यकाल या वर्तमान काल। शिक्षा उस समय प्रचलित धर्म, दार्शनिक विचारधारा, आडम्बरों, रूढ़ियों से प्रभावित रही है। इस प्रकार मध्यकाल की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मुस्लिम धर्म का प्रचार व प्रसार करना है। मध्यकाल में प्रचलित यूसुफ हुसैन ने अपनी पुस्तक मुस्लिम काल में शिक्षा में ज्ञान के निम्न उद्देश्य बताए हैं :

SAMPLE

1 ज्ञान में वृद्धि करना (Expansion of Knowledge)

2 चरित्र का निर्माण करना (Formation of Character)

3 नैतिक विकास करना (Moral Development)

4 राजनैतिक व सामाजिक क्रम की व्याख्या (Organisation of Political and Social System)

5 मुस्लिम धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना (Propogation and Spread of Muslim Religion)

6 मुस्लिम संस्कृति का संरक्षण व प्रसारण करना (Preservation and Spread of Muslim Culture)

आधुनिक लोकतन्त्रतीय भारत में शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education in Present Democratic in India)

मूल रूप से भारत की आधारशिला स्वतन्त्रता, समानता एवं न्याय के सिद्धान्तों पर रखी गई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज का समन्वित विकास इन्हीं सिद्धान्तों पर करना लोकतन्त्र का धर्म माना गया है। अतः लोकतन्त्र की सफलता के लिए शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण आवश्यक हो जाता है। शिक्षा के कुछ ऐसे उद्देश्य जो हर काल में प्रभावी रहे है चूंकि शिक्षा को मानव विकास का मूल साधन माना जाता है और शिक्षा द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना भी है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए आधुनिक भारत में शिक्षा के निम्न उद्देश्यों को शामिल किया गया है।

शारीरिक विकास, मानसिक विकास, वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास, सांस्कृतिक सहिष्णुता का विकास, नैतिक एवं चारित्रिक विकास, व्यावसायिक विकास, लोकतन्त्र और लोकतन्त्रीय नागरिकता की शिक्षा, जनसंख्या, शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा इत्यादि उद्देश्य बताए गए हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न आयोग, शैक्षिक समितियों, शिक्षा के उद्देश्यों से सम्बन्धित अपने सुझाव दिये हैं।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य–

1. छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना।
2. छात्रों में नैतिकता सद्व्यवहार एवं आदर्श नागरिकता के गुणों का विकास करना।
3. प्रजातन्त्र की सफलता के लिए कुशल नागरिकों का निर्माण करना।
4. विभिन्न व्यवसाय कृषि, वाणिज्य, राजनीति तथा प्रशासन हेतु उचित नेतृत्व प्रदान करना।

मुदालियर आयोग 1952 के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य–

1. प्रजातान्त्रिक नागरिकता का विकास करना।
2. व्यावसायिक कुशलता का विकास करना।
3. व्यक्तित्व का विकास।